

## परसपेक्टवि: भारत के वदिशी मुद्रा भंडार का रकिॉर्ड स्तर पर पहुँचना

### प्रलिमिंस के लयि:

[भारतीय रज़िर्व बैंक \(RBI\)](#), [वदिशी मुद्रा भंडार](#), [वर्ष 1990-91 का आर्थिक संकट](#), [भुगतान संतुलन](#), [सवर्ण भंडार](#), [वशिष आहरण अधिकार](#), [अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष \(IMF\)](#), [मूलयवृद्धि](#), [अवमूलयन](#), [प्रतयकष वदिशी नविश](#)

### मेन्स के लयि:

भारतीय वदिशी मुद्रा भंडार तथा भारतीय अर्थव्यवस्था पर उदारीकरण का प्रभाव

## चर्चा में क्यों?

[भारतीय रज़िर्व बैंक \(RBI\)](#) के हालिया आँकड़ों के अनुसार, भारत का [वदिशी मुद्रा भंडार](#) बढ़कर **655.817 अमेरिकी डॉलर** हो गया है।

- इसके अतरिकित भारत की [वदिशी मुद्रा आस्तियाँ \(FCA\)](#), जो वदिशी मुद्रा भंडार का सबसे बड़ा घटक है, बढ़कर **576.337 बलियिन अमेरिकी डॉलर** हो गई।
- जबकि [सवर्ण भंडार](#) बढ़कर **56.982 बलियिन अमेरिकी डॉलर** हो गया।
- RBI के अनुसार, वर्तमान में भारत के पास लगभग **11 महीने के अनुमानित आयात** को कवर करने के लिये वदिशी मुद्रा भंडार है।

## वदिशी मुद्रा भंडार क्या है?

- वदिशी मुद्रा भंडार एक केंद्रीय बैंक द्वारा वदिशी मुद्राओं में आरक्षति रखी गई परसिंपत्तियाँ हैं, जनिमें [बॉण्ड](#), [ट्रेजरी बलि](#) और अन्य [सरकारी प्रतभितियाँ](#) शामिल हो सकती हैं।
- [वर्ष 1990-91 के आर्थिक संकट](#) के पश्चात् सी. रंगराजन तथा वाई. वी. रेड्डी की अध्यक्षता में [भुगतान संतुलन](#) पर उच्च स्तरीय समिति ने सफिराशि की थी कि भारत के पास **12 महीने की आयात आवश्यकताओं** के लिये वदिशी मुद्रा भंडार होना चाहिये।

## भारत के वदिशी मुद्रा भंडार के प्रमुख घटक क्या हैं?

- भारत के वदिशी मुद्रा भंडार में शामिल हैं:
  - [वदिशी मुद्रा परसिंपत्तियाँ](#)
  - [सवर्ण भंडार](#)
  - [वशिष आहरण अधिकार](#)
  - [अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष \(IMF\)](#) के साथ आरक्षति स्थिति
- यह ध्यान देने योग्य बात है कि [अधकिंश वदिशी मुद्रा भंडार अमेरिकी डॉलर](#) में रखे जाते हैं।

## वदिशी मुद्रा भंडार रखने का उद्देश्य क्या है?

- आमतौर पर वदिशी मुद्रा भंडार की आवश्यकता उन देशों को होती है जो अपने [आयातों का भुगतान अपनी मुद्राओं में नहीं](#) कर सकते और उन्हें [इस उद्देश्य के लिये वदिशी मुद्राओं की आवश्यकता](#) होती है।
- भारत में वदिशी मुद्रा भंडार मुख्य रूप से [मौद्रकि एवं वनिमिय दर प्रबंधन की नीतियों में वशिवास](#) को समर्थन के साथ-साथ उसे बनाए रखकर [आर्थिक सुरक्षा के उद्देश्य को पूर्ण](#) करता है।
- राष्ट्रीय मुद्रा के समर्थन में हस्तकषेप करने की क्षमता प्रदान करता है।
- संकट की स्थिति या जब उधार लेने की सुवधि सीमति हो जाती है, तब कटौती को अवशोषति करने के लिये वदिशी मुद्रा तरलता बनाए रखकर बाह्य भेद्यता को सीमति कयिा जाता है।

## बढ़ते वदेशी मुद्रा भंडार का क्या महत्त्व है?

- सरकार के लिये बेहतर स्थिति: वदेशी मुद्रा भंडार में हो रही बढ़ोतरी भारत के बाहरी और आंतरिक वित्तीय मुद्दों के प्रबंधन में सरकार तथा RBI को बेहतर स्थिति प्रदान करता है।
- संकट प्रबंधन: यह आर्थिक मोर्चे पर **भुगतान संतुलन (Balance of Payment- BoP)** संकट की स्थिति से निपटने में मदद करता है।
- रुपया मूल्यह्रास (Rupee Appreciation): बढ़ते भंडार ने डॉलर के मुकाबले रुपए को मजबूत करने में मदद की है।
- बाज़ार में विश्वास: भंडार बाज़ारों और निवेशकों को विश्वास का एक स्तर प्रदान करेगा जिससे एक देश अपने बाहरी दायित्वों को पूरा कर सकता है।

## क्या हर देश को वदेशी मुद्रा भंडार की आवश्यकता है?

- नहीं, हर देश के पास वदेशी मुद्रा भंडार होना ज़रूरी नहीं है। किसी देश द्वारा **वदेशी मुद्रा भंडार** बनाए रखना उसके उद्देश्य पर निर्भर करता है।
- वभिन्न देशों में वदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग अलग-अलग तरीके से किया जाता है, जैसे **सांगापूर** में इसका उपयोग **संप्रभु धन नधि** के रूप में किया जाता है।
- जबकि **भारत** में इसे आयात **बलि प्रबंधन और रुपए के वनिमिय दर प्रबंधन के संबंध** में आर्थिक सुरक्षा के लिये बनाए रखा जाता है।
- अमेरिका और ब्रिटेन** जैसे देशों को बड़े वदेशी मुद्रा भंडार रखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उनकी मुद्राएँ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य हैं।

# रुपए का अंतर्राष्ट्रीयकरण

### अर्थ

- सीमा पार हस्तांतरण में भारतीय रुपए के उपयोग में वृद्धि करना
- इसमें शामिल है
- आयात और निर्यात के लिये रुपए का उपयोग
- चालू और पूंजी खाता हस्तांतरण के लिये रुपए का उपयोग

भारतीय रुपया चालू खाते में पूरी तरह से लेकिन पूंजी खाते में आंशिक रूप से परिवर्तनीय है।

### आवश्यकता

- अमेरिका द्वारा अमेरिकी डॉलर का हथियारीकरण (प्रतिबंधों के लिये)
- डी-डॉलराइजेशन की लहर
- चीनी मुद्रा रेंमिन्बी का बढ़ता अंतर्राष्ट्रीयकरण
- वैश्विक वदेशी मुद्रा बाज़ार कारोबार में भारत की न्यूनतम हिस्सेदारी (1.7%)

### RBI के प्रयास

- सीमा-पार व्यापार में भारतीय मुद्रा - विदेश व्यापार नीति 2023 में प्रमुख घटक
- 18 देशों के साथ रुपए में व्यापार समझौते हेतु तंत्र प्रस्तुत किया गया
  - इन देशों के बैंकों को विशेष चोस्ट्रो रुपया खाते (SVRAs) खोलने की अनुमति दी गई
- "भारतीय रुपए में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौता" पर परिपत्र (2022)
- भारतीय रुपए में बाह्य वाणिज्यिक उधार को सक्षम बनाया गया

### महत्त्व

- अमेरिकी डॉलर पर कम निर्भरता
- वदेशी मुद्रा भंडार रखने की कम आवश्यकता
- भारतीय व्यापार की बेहतर सौदा निपटान शक्ति
- मुद्रा की अस्थिरता का कम जोखिम

### चुनौतियाँ

- रुपया का पूरी तरह से परिवर्तनीय न होना
- अन्य देशों को भारतीय रुपया (INR) रखने की कम आवश्यकता; वैश्विक निर्यात में भारत की कम हिस्सेदारी
- बाह्य आघातों के प्रति रुपया और अधिक संवेदनशील हो सकता है
- रुपए की आपूर्ति पर भारत का कम नियंत्रण

### उठाए जा सकने योग्य कदम

- INR में अधिक उदारीकृत निपटान (भारत और विदेशों में)
- भारत को वैश्विक वित्तीय बाज़ार में अपनी पहुँच का विस्तार करना चाहिये
- व्यापार घाटे को कम करने के लिये निर्यात-उत्मुख अर्थव्यवस्था में परिवर्तित होना



## कम वदिशी मुद्रा भंडार की चुनौतियाँ क्या हैं?

- **आर्थिक संकट:** कम वदिशी मुद्रा भंडार से भुगतान संतुलन का संकट उत्पन्न हो सकता है, जैसा कविर्ष 1990-91 के दौरान भारत में तथा हाल के वर्षों में श्रीलंका जैसे देशों में देखा गया।
- **नविशकों का वशिवास:** कम वदिशी मुद्रा भंडार का अर्थ है देश की अर्थव्यवस्था में नविशकों का कम वशिवास, जिसके कारण नविश में बदलाव आता है।
- **आयात लागत में वृद्धि:** वदिशी मुद्रा भंडार कम होने के कारण, देश को कच्चे तेल, मशीनरी और कच्चे माल जैसे आवश्यक आयातों को वहन करने में कठिनाई हो सकती है, जिससे आपूर्ति शृंखला में व्यवधान उत्पन्न हो सकता है।
- **मुद्रास्फीति का दबाव:** कम वदिशी मुद्रा भंडार के कारण डॉलर की मांग बढ़ जाती है, जिससे आयात महँगा हो जाता है। आयात लागत में यह वृद्धि वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में वृद्धि का कारण बन सकती है, जिससे समग्र मुद्रास्फीति में योगदान होता है।

## वदिशी मुद्रा परसिंपत्तियाँ (FCA)

- **FCA** ऐसी संपत्तियाँ हैं जिनका मूल्यांकन देश की स्वयं की मुद्रा के अलावा किसी अन्य मुद्रा के आधार पर किया जाता है।
- **FCA, वदिशी मुद्रा भंडार** का सबसे बड़ा घटक है। इसे डॉलर के रूप में व्यक्त किया जाता है।
- **FCA पर वदिशी मुद्रा भंडार** में रखे गए यूरो, पाउंड और येन जैसी गैर-अमेरिकी मुद्रा की कीमतों में **अभिमूल्यन (Appreciation)** या **अवमूल्यन (Depreciation)** का प्रभाव पड़ता है।

## वशिष आहरण अधिकार

- वशिष आहरण अधिकार को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (International Monetary Fund-IMF) द्वारा वर्ष 1969 में अपने सदस्य देशों के लिये अंतरराष्ट्रीय आरक्षण संपत्ति के रूप में बनाया गया था।
- **SDR** न तो एक मुद्रा है और न ही **IMF** पर इसका दावा किया जा सकता है। बल्कि यह **IMF के सदस्यों** का स्वतंत्र रूप से प्रयोग करने योग्य मुद्राओं पर एक संभावित दावा है। इन मुद्राओं के लिये SDR का वनिधिमन किया जा सकता है।
- SDR के मूल्य की गणना 'बास्केट ऑफ करेंसी' में शामिल मुद्राओं के औसत भार के आधार पर की जाती है। इस बास्केट में पाँच देशों की मुद्राएँ शामिल हैं- अमेरिकी डॉलर, यूरोप का यूरो, चीन की मुद्रा रेंमिन्बी, जापानी येन और ब्रिटन का पाउंड।

## अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष में आरक्षण भंडार:

- **रज़िर्व ट्रेन्च** का तात्पर्य मुद्रा के आवश्यक कोटे के एक हिस्से से है जो प्रत्येक सदस्य देश को IMF को प्रदान करना होता है, जिसका उपयोग अपने स्वयं के उद्देश्यों के लिये किया जा सकता है।
- **रज़िर्व ट्रेन्च** का उपयोग सदस्य देश अपने स्वयं के प्रयोजनों के लिये कर सकते हैं। इस मुद्रा का प्रयोग सामान्यतः **आपातकाल स्थिति** में किया जाता है।

## आगे की राह

- **नरियात बढ़ाएँ:** नरियात प्रतिसिपर्द्धा को बढ़ावा देने और आयात पर नरिभरता कम करने के लिये नीतियों को लागू करना।
- **FDI को बढ़ावा देना:** स्थिर, दीर्घकालिक पूंजी लाने के लिये **प्रत्यक्ष वदिशी नविश** हेतु अनुकूल वातावरण बनाना।
- **घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना:** आयात पर नरिभरता कम करने और आत्मनरिभरता बढ़ाने के लिये **आवश्यक वस्तुओं के घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित** करना।
- **रणनीतिक वस्तु भंडार:** वैश्विक मूल्य अस्थिरता से निपटने हेतु कच्चे तेल जैसे महत्त्वपूर्ण आयातों के लिये रणनीतिक भंडार स्थापित करना।
- **लचीली वनिधिय दरें:** बाहरी झटकों को अवशोषित करने और भंडार पर दबाव कम करने के लिये अधिक लचीली वनिधिय दर नीतियों की अनुमति देना।
- **पारदर्शी नीतियाँ:** नविशकों का वशिवास बनाए रखने हेतु पारदर्शी एवं सुसंगत आर्थिक नीतियाँ अपनाना।
- **आपूर्ति शृंखला प्रबंधन:** व्यवधानों को कम करने एवं दक्षता बढ़ाने के लिए उन्नत आपूर्ति शृंखला प्रबंधन प्रणालियों को लागू करना।

## UPSC सविलि सेवा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. वर्ष 1991 में आर्थिक नीतियों के उदारीकरण के बाद भारत में नमिनलखिति में से कौन-से प्रभाव देखे गए? (2017)

1. सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की हस्सिसेदारी में भारी वृद्धि हुई।
2. वशिष व्यापार में भारत के नरियात का हस्सिसा बढ़ा।
3. FDI प्रवाह बढ़ा।
4. भारत के वदिशी मुद्रा भंडार में भारी वृद्धि हुई।

नीचे दिये गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिये:

- (a) केवल 1 और 4
- (b) केवल 2, 3 और 4
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (b)

प्रश्न. भुगतान संतुलन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सी मदें चालू खाता का भाग हैं? (2014)

1. व्यापार संतुलन
2. वदेशी संपत्ति
3. अदृश्य का संतुलन
4. वशिष आहरण अधिकार

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) केवल 1, 2 और 4

उत्तर: (c)

PDF Reference URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/perspective-india-s-forex-reserves-hit-record-high>

